धर्म दर्शन

MJC-08

ईकाई - I

① * 1. तुलनात्मक धर्म की सम्भावना एवं आवश्यकता –

1. धर्म क्या है?

2. तुलनात्मक धर्म के अध्ययन की आवश्यकता?
लाभ: —

Dr. Priyanka Kumari

→ नीत्शे – ईश्वर (मर) गया है।
→ मार्क्स – धर्म गरीबों के लिये (अफीम) के समान है
→ ईश्वर
मार्क्स – ईश्वर की उपासना मानसिक अफीम की गोली है।

* तुलनात्मक धर्म के अध्ययन का लक्ष्य है कि धर्मों के बीच सम्प्रेषण और संगोष्ठी हो जिसके आधार पर सर्व धर्मसमभाव और धर्म समन्वय स्थापित हो सके।

→ डॉ. जी. कैम्बर तथा आचार्य ने कहा है कि धर्म कल्पना और अन्धविश्वास है और निकट भविष्य में धर्म का लोप हो जायेगा।

② * धर्मों के मध्य समानता तथा भिन्नता

सभी धर्मों के बीच समानता – आन्तरिक पक्ष को लेकर
भिन्नता – बाह्य पक्ष / कर्मकांड को लेकर

③ अन्तर - धार्मिक संवाद

(4) धार्मिक अनुभव

→ किसी धर्मपरायण व्यक्तियों अथवा भक्तों द्वारा किसी अलौकिक अथवा दैवी सत्ता का जो विशेष प्रकार का अनुभव ~~अनुभव~~ प्राप्त होता है उसे ही धार्मिक अनुभव कहा जाता है।

→ धार्मिक व्यक्ति धार्मिक अनुभव की अभिव्यक्ति —

पूजा-पाठ
प्रार्थना
जप-तप
धार्मिक अनुष्ठान } के माध्यम से करता है।

→ किसी अतीन्द्रिय / दैवी सत्ता पर पूर्ण निर्भरता उसके प्रति अखंड श्रद्धा, सम्मान, प्रेम, आत्म नियंत्रण तथा पूजा की भावना धार्मिक अनुभव के अनिवार्य तत्व हैं।

→ रूडोल्फ ऑटो के अनुसार धार्मिक अनुभव अवर्णनीय है।

→ रूडोल्फ के अनुसार धार्मिक अनुभव में तीन तत्व अनिवार्यतः विद्यमान रहता है —

1. भय एवं श्रद्धायुक्त विस्मय
2. रहस्यात्मकता तथा
3. प्रेममय तीव्र आकर्षण

→ विटगेंस्टाइन, मैकफर्सन } दोनों धार्मिक अनुभव को अवर्णित मानते हैं

→ धार्मिक अनुभव की विशेषताएं —

इन्द्रियानुभव
सौन्दर्यानुभव
नैतिक अनुभव

(5) दिव्य के अवबोध के प्रकार

Modes of understanding the divine

The Life Divine - Sri Aurobindo

→ श्री अरविन्द के अनुसार 'दिव्य जीवन' पर जीवन होगा जहाँ के सभी मानव ज्ञान पुरुष (Gnostic Being) होंगे।

* दिव्य जीवन का (Divine Life) अर्थ है - "धरती पर ईश्वरत्व का जीवन। पूर्णता का जीवन।

→ यह जीवन सीमित चेतना का जीवन नहीं होगा - कि जीवन में चेतना शरीर तथा मानस के घेरे में बंधी नहीं होगी बल्कि यह पूर्ण आध्यात्मिक चेतना होगी।

* दिव्य जीवन के विषय में श्री अरविंद कहते हैं "To be and to be fully is Nature's aim in us" ~~हममें~~ हममें प्रकृति का लक्ष्य यही है कि हम पूर्णता में अस्तित्वमान रहें।

दिव्य जीवन का स्वरूप

दिव्य जीवन: चेतना युक्त जीवन

i. पूर्णतः आत्म-चेतना युक्त जीवन
ii. पूर्णतः आत्म नियंत्रण
iii. आह्लाद एवं आनन्द का जीवन
iv. पूर्णता के साथ होने (to be fully)
v. पूर्ण परात्परता का जीवन
vi. दिव्य जीवन में रहने वाले 'स्व' तथा जगत के परे रहते हैं।
vii. यह पूर्णतः आध्यात्मिकता का जीवन है।

→ जैन में कैवल्य
बौद्ध में मुक्त पुरुष
शंकर में आत्मज्ञानी
} सभी ज्ञानी के नाम हैं।